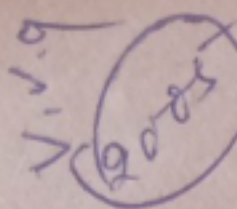


1)



नाम

स्नातक द्वितीय एवं हिंदी प्रतिष्ठा
द्वितीय पत्र हिंदी प्रतिष्ठा
- प्रो० हरेकृष्ण झा डीर, हिंदी विभाग,
जे० एन० कॉलेज, मधुबनी

प्रश्न - नाम शीर्षक कविता का भाव समझकर

उत्तर - नाम सुमित्रानन्दन पंत की एक प्रगति-
वादी रचना है। प्रस्तुत कविता में कवि
(मृतमानव की कक्षा) और जीवित मानव में
नाम का भावुकता के स्तर पर नहीं
आपतु वैदिकता के क्षाराल पर तुलनात्मक
परीक्षण किया है।

वस्तुतः नाम का आवलीकन कर
भावुक व्यक्तियों के दृश्य में प्रेम की तरंगों-
हिलोरी लेने लगती है परन्तु कवि के दृश्य में
सामान्यशाही और पूर्णवादी मनोवृत्तियों
के प्रतीक के रूप में नाम की देरवकर विद्रोह
का भाव आगत हो जाता है। वह अनुभाव
करता है कि एक और नाम का वैभव है, जो
दूसरी और शीघ्र अनन्त की दिन-दिन दृष्टि
कवि इस विषय पर निरीक्षण कर चुका है
उठता है और मानसिक आक्रोश वाणी के
रूप में प्रकट होता है।

कविकी इस स्थिति से आत्मान

दूरव डोना है कि अब आ के जीवन मांगी का
जीवन हरिद्वारा और शोधन की चक्की में
पिसकर धानीय सब नियाँव हो गया है, नव
मूल्य को ऐसी आलौकिक और दिव्य पूजा की
आयी। यह सब की दूरव की बात है कि शिव को
सांगमरमर के वैभवशाली महल में रखा आया
और जीवन मनुष्य नंगा, भूख से ललाकुल
और निराश्रित रहे। हे मनुष्य! तुझे जीवन से भी
ऐसी क्या धृणा हो गयी है जो तू उ-आत्मा का
निरस्कार कर प्रेम और दया के प्रेम में मस्त हो
कवि नाथ को सम्बोधित करते हुए

कहता है कि हे नाथ तुम चित्राकर्तृक अवस्था हो,
परन्तु तुम अतीत की रूढ़ियों के प्रातिक हो।
आतः तुम्हें तो वे ही लीला प्यार करते हैं जो
उन सड़ी गली रूढ़ियों के शिकार हैं।
नाथ पर्य यह कि मानवता को प्यार करने वाला और
मानव को शोधन के चक्रों में घुसा देने वाला
अभिलाषी सगतिशाल विचारक कभी भी पुरानी
मान्यताओं के प्रातिक नाथ को प्यार
नहीं कर सकता।

हम उस सँदेश को विस्तृत कर चुके हैं कि
मृतकों का सँवैला मृतकों से ही होता है।

आतः मृतक ही मृतक को खार कर सकता है
और जीवित व्यक्तियों को लिख मानव
ही ईश्वर की विभूति के रूप में है।

आतः जीवित व्यक्तियों को जीवित मानव
के सुख-दुख का हलाना परवत चाहिये।

म कि मृत व्यक्तियों की कसों तला उनके मृत
आदमियों के हलाना में लीन होकर जीवित
व्यक्तियों की उपेक्षा कर देनी चाहिये।

उन पंक्तियों में कवि की मानव के प्रति

गहन आस्था प्रकट होती है कि मानव

का सर्वोत्तम लक्ष्य मानव का सर्वोत्तम विकस
करना ही है।

प्रगतिवादी कवि की धारणा के

अनुसार ही कवि ने विवेक कविता में हम

सब सुबोधा भाषा शैली के माध्यम से

आपने विचारों को सामग्री दिव करने का साफल

प्रयत्न किया है।